शैलाश्रय एवं शैलचित्र, भीम बेटका गुफाओं के विशेष सन्दर्भ में
(ROCK SHELTER AND PAINTINGS WITH SPECIAL REFERENCE TO BHIM BETKA)

भारत में सबसे अधिक शैल चित्र मध्य प्रदेश से प्राप्त हुए हैं। इन शैल चित्रों का सम्बन्ध प्रागैतिहासिक काल, ताम्रपाषाण काल एवं ऐतिहासिक काल से माना जाता है। भारतीय पुरातत्व के अध्ययन में शैल चित्र एक नई विद्या के रूप में उभरकर सामने आये हैं। इन शैल चित्रों द्वारा हम प्रागैतिहासिक मानव की कलात्मक अभिरुचि को समझ सकते हैं। देश के लगभग 80 प्रतिशत शैलचित्र मध्य प्रदेश में ही है। विदेशों से अनेक विद्वान शैल चित्रों के अध्ययन हेतु मध्य प्रदेश आ चुके हैं तथा विदेशी शोध ग्रन्थों में इनका प्रकाशन हो चुका है। 1956 में मध्य प्रदेश के निर्माण के पूर्व शैल चित्रों की प्राप्ति कैमूर, रायगढ़, होशंगाबाद तथा पंचमढ़ी आदि क्षेत्रों में हो चुकी थी।

भीम बेटका (म. प्र.) के शैल चित्र (Rock Paintings of Bhim Betka)—प्रागैतिहासिक शैल चित्रों के स्थलों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थल मध्य प्रदेश में भीम बेटका है। यह भोपाल के दक्षिण में 46 km दूरी पर दक्षिण विध्य पर्वत श्रृंखला पर स्थित है। यहाँ 10 वर्ग किमी. क्षेत्र में बिखरी 500 से अधिक चित्रित गुफाएँ प्राप्त हुई हैं। यहाँ पुरापाषाण काल से लेकर मध्य पाषाण काल तक के शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। अभी हाल में ही यहाँ नवपाषाणकालीन 600 से अधिक शैल चित्र भी प्राप्त हुए हैं।

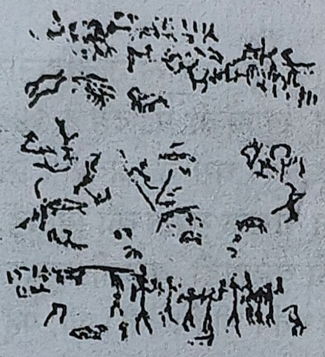

चित्र—भीम बेटका के शैलचित्र

चित्र—भीम बेटका के शैलचित्र

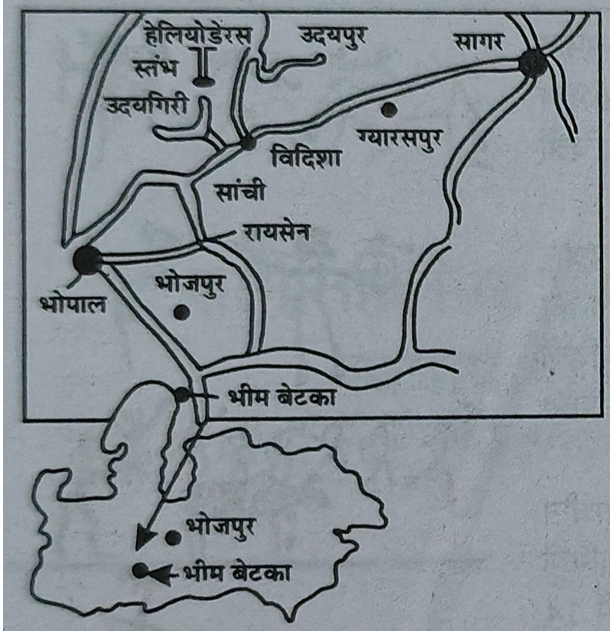

चित्र

I. पुरापाषाण कालीन शैल चित्र (Upper Palaeolithic Rock Paintings)—इस काल के चित्रों में हरी एवं गहरी लाल रेखाओं के माध्यम से बड़े जानवरों जंगली भैंसा, चीता एवं गैंडा के चित्र उकेरे गये हैं।

II. मध्य पाषाणकालीन शैल चित्र (Mesolithic Rock Painting)—इस काल के शैल चित्रों में जानवरों के अलावा मानव भी रेखाओं द्वारा चित्रित मिलते हैं। इनमें शिकार के जो चित्र हैं, उनमें तत्युगीन मानव द्वारा उपयोग में लाये गये पत्थर के हथियार-नुकीली धड़, धनुष बाण, पैना वल्लम भी उकेरे गये हैं। इन चित्रों में नाचते हुए चित्र, पत्तियों के चित्र, माँ एवं बच्चे के चित्र, मानव द्वारा मृत जानवर को ले जाता चित्र आदि प्राप्त हुए हैं।

III. ताम्रपाषाण कालीन शैल चित्र (Chaleolithic Rock Painting)—इस काल के चित्र पहले कालों की तुलना में अधिक बारीक एवं साफ हैं। इन चित्रों से पता चलता है कि मानव कृषि से परिचित हो चुका था एवं अपनी आवश्यकता हेतु वह विनिमय के तरीके सीख गया था।

आज भीम बेटका के शैल चित्र पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बन गये हैं। यहाँ के शैल चित्रों में सर्वाधिक चित्रांकन जंगली सुअर, जंगली भैंसा, बन्दर एवं नील गाय आदि का मिलता है। पशुओं को अकेला अथवा छोटे-बड़े समूहों में चित्रित किया गया है। अनेक चित्रों में मनुष्य को शिकार करते दिखाया गया है। इन चित्रों से शिकार करने वाले हथियार एवं जानवरों की जानकारी मिलती है।

विद्वानों के मतानुसार भीम बेटका में बने शैल चित्र 8000 ई. पू. से लेकर 15000 ई. पू. तक के हैं। यहाँ प्राप्त चित्रों में अपूर्व संसार बसा हुआ है। ऐसी विस्मयपूर्ण प्रागैतिहासिक चित्रशालाएँ विश्व में अन्यत्र नहीं मिलती हैं। भीम बेटका के शैल चित्रों की खोज का श्रेय विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के वी. एस. वाकणकर महोदय को जाता है।